कार्यशाला प्रतिवेदन

अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों हेतु विदेश में उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता

(अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन की योजनाएँ)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

सामाजिक समरसता गतिविधि श्रृंखला के अन्तर्गत

एक दिवसीय कार्यशाला

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों हेतु

विदेश में उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता

(अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन की योजनाएँ)

13 मई 2025

अध्यक्षता

प्रो. नीलिमा गुप्ता

माननीया कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

अतिथि वक्ता

डॉ. चन्द्रशेखर मालवी

मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग

माधव प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, ग्वालियर (म.प्र.)

आयोजक

अधिष्ठाता, छात्र कल्याण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विश्वविद्यालय के विद्यार्थी दुनिया के अलग-अलग देशों से नयी तकनीक, ज्ञान और कौशल सीखें और भारत आकर विकसित भारत के निर्माण में योगदान दें- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय में अनुसूचित जाति (एससी) वर्ग के छात्र/छात्राओं के लिए विदेश में उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति विषयक कार्यशाला आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में सामजिक समरसता गतिविधि श्रृंखला के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश शासन

की योजना के तहत, अनुसूचित जाति (एससी) वर्ग के छात्र/छात्राओं को विदेश में उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता प्रदान, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना एवं अन्य छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी दी गई.

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विदेश जाना हर भारतीय का सपना होता है. विश्वविद्यालय के छात्रों की यही भावना होती है. इसी भावना को ध्यान में रखकर इस कार्यशाला को आयोजित किया गया है. भारत से बाहर पढ़ने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है. विदेश जाने का यह आशय नहीं है कि हम पढ़कर वहीं बस जाएँ या वहां की नागरिकता लेकर वहीं कार्य करें. विदेशों से पढ़ने का मेरा आशय यह है कि विद्यार्थी दुनिया के अलग-अलग देशों से नयी तकनीक, ज्ञान और कौशल सीखें और भारत आकर देश की सेवा करें. विकसित भारत की दिशा में यह उनका महत्त्वपूर्ण योगदान होगा. देश सेवा सर्वोपरि है. विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. गौर, गांधी जी, डॉ. अम्बेडकर भी विदेश पढ़ने गये लेकिन उन्होंने वहां से ज्ञान प्राप्त कर भारत वापस आकर देश की आजीवन सेवा की. विश्वविद्यालय में विदेशी विद्यार्थियों के प्रवेश का भी रास्ता खुल रहा है. विश्वविद्यालय के शिक्षकों के 125 से अधिक कोलैबोरेशन हैं. कुल मिलाकर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में भारत आगे बढ़ रहा है. हमारा विश्वविद्यालय भी उसी दिशा में कार्य कर रहा है. शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण हो लेकिन भारत के छात्र विदेशों से पढ़कर भारत की सेवा करें, यही मेरी कामना है.

मुख्य वक्ता माधव इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी एन्ड साइंस, ग्वालियर के डॉ. चंद्र शेखर मालवी ने अपने वक्तव्य की शुरुआत उन प्रश्नों से की जो विदेश पढ़ने जाने को इच्छुक एक सामन्य विद्यार्थी के मस्तिष्क में आते हैं. जैसे कौन से देश जाएँ, किस विदेशी विश्वविद्यालय में पढ़ें, पाठ्यक्रम कौन सा चुनें, कौन सी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करें, क्या क्या दस्तावेज और प्रक्रियाएं हैं इत्यादि. उन्होंने टॉप दस देशों की चर्चा करते हुए हर तरह की पढाई उपलब्ध कराने वाले देशों की चर्चा की जिनमें भारत के विद्यार्थी पढ़ने के लिए जा सकते हैं. उन्होंने यूके, अमेरिका, फ्रांस, चीन, नार्वे,

आस्ट्रेलिया, जर्मनी, सिंगापुर जैसे कई देशों की चर्चा की. उनकी रैंकिंग और उनमें होने वाले खर्चों के बारे में भी बताया. उन्होंने उन दस्तावेजों की भी चर्चा की जो विदेशों में पढ़ाई के लिए आवश्यक होते हैं. टोफेल, जीआरई, पीटीई, जीमैट जैसे कई अंग्रेजी योग्यता प्रदायी आवश्यक परीक्षाओं के बारे में भी बताया. नेशनल ओवरसीज स्कालरशिप के साथ-साथ उन्होंने मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्ति, उनकी वधि, पाठ्यक्रम, उनकी राशि, दस्तावेज, अन्य प्रक्रियाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी. डॉ. मालवी ने अन्य छात्रवृत्ति जैसे फुल ब्राईट, फेलोशिप, जे एन टाटा फेलोशिप, अगाथा हैरिसन स्कालरशिप, डाड, ग्रिफिथ आदि छात्रवृत्तियों के बारे में चर्चा करते हुए वहां पढ़ाई के साथ-साथ काम करने के अवसरों और तरीकों के बारे में भी बताया.

कार्यशाला में सामाजिक समरसता गतिविधि के मार्गदर्शक सुनील जी ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया. उन्होंने कहा किभारत के युवा आगे आयें. सामजिक समरसता भारत की पहचान है. भारत के युवा विकसित भारत के निर्माण में योगदान करें. ज्ञान अर्जन और ज्ञान का उपयोग राष्ट्र हित में करें इसी से प्रगट भारत का निर्माण होगा. यह कार्यशाला तभी सफल होगी जब विद्यार्थी इससे प्रेरणा लेकर अपने विदेश में पढ़ने के सपनों को पूरा करेंगे. कार्यक्रम में स्वागत भाषण फैकल्टी अफेयर्स के निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने दिया. कार्यशाला का परिचय और उद्देश्य छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. डी. के नेमा ने साझा किया. संचालन डॉ. शालिनी ने किया. आभार प्रदर्शन प्रो. रत्नेश दास ने किया.

कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में अध्ययनरत स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों ने सहभागिता कीराजेन्द्र या .प्रो ,चंदा बेन .इस अवसर पर कुलानुशासक प्रो .दव .डॉ ,कालीनाथ झा .प्रो ,नागेश दुबे .प्रो , .सहित विभिन्न विभागाध्यक्ष उपस्थित थे ,वेंकटमुनि रेड्डी

सामाजिक समरसता गतिविधि श्रृंखला के अन्तर्गत
एक दिवसीय कार्यशाला - अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों हेतु
विदेश में उच्च शिक्षा हेतु
छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता
(अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन की योजनाएँ)
13 मई 2025

(अनुसूचित जाति कल्याण विभाग,
13 मई 20

प्रो. नीलिमा गुप्ता
डॉ. चन्द्रशेखर मालवी

छात्रवृत्ति एवं वित्तीय
(अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश शासन की योजनाएँ)
13 मई 2025
आयोजक

विद्यार्थी दुनिया के अलग-अलग देशों से नयी तकनीक, ज्ञान और कौशल सीखें: कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

छात्र-छात्राओं के लिए विदेश में उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति विषयक कार्यशाला का आयोजन हुआ

सागर दिनकर

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में सामजिक समरसता गतिविधि श्रृंखला के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में अनुसूचित जाति कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश शासन की योजना के तहत, अनुसूचित जाति (एससी) वर्ग के छात्र-छात्राओं को विदेश में उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता प्रदान, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना एवं अन्य छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी दी गई।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विदेश जाना हर भारतीय का सपना होता है। विश्वविद्यालय के छात्रों की यही भावना होती है। इसी भावना को ध्यान में रखकर इस कार्यशाला को आयोजित किया गया है। भारत से बाहर पढ़ने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। विदेश जाने का यह आशय नहीं है कि हम पढ़कर वहीं बस जाएँ या वहां की नागरिकता लेकर वहीं कार्य करें। विदेशों से पढ़ने का मेरा आशय यह है कि विद्यार्थी दुनिया के अलग-अलग देशों से नयी तकनीक, ज्ञान और कौशल सीखें और भारत आकर देश की सेवा करें। विकसित भारत की दिशा में यह उनका महत्त्वपूर्ण योगदान होगा। देश सेवा सर्वोपरि है। विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. गौर, गांधी जी, डॉ. अम्बेडकर भी विदेश पढ़ने गये लेकिन उन्होंने वहां से ज्ञान प्राप्त कर भारत वापस आकर देश की आजीवन सेवा की। विश्वविद्यालय में विदेशी विद्यार्थियों के प्रवेश का भी रास्ता खुल रहा है. विश्वविद्यालय के शिक्षकों के 125 से अधिक कोलैबोरेशन हैं। कुल मिलाकर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में भारत आगे बढ़ रहा है। हमारा विश्वविद्यालय भी उसी दिशा में कार्य कर रहा है। शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण हो लेकिन भारत के छात्र विदेशों से पढ़कर भारत की सेवा करें, यही मेरी कामना है।

मुख्य वक्ता माधव इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी एन्ड साइंस, ग्वालियर के डॉ. चंद्र शेखर मालवी ने अपने वक्तव्य की शुरुआत उन प्रश्नों से की जो विदेश पढ़ने जाने को इच्छुक एक सामन्य विद्यार्थी के मस्तिष्क में आते हैं। जैसे कौन से देश जाएँ, किस विदेशी विश्वविद्यालय में पढ़ें, पाठ्यक्रम कौन सा चुनें, कौन सी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करें, क्या क्या दस्तावेज और प्रक्रियाएं हैं इत्यादि। उन्होंने टॉप दस देशों की चर्चा करते हुए हर तरह की पढ़ाई उपलब्ध कराने वाले देशों की चर्चा की जिनमें भारत के विद्यार्थी पढ़ने के लिए जा सकते हैं. उन्होंने यूके, अमेरिका, फ्रांस, चीन, नार्वे, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, सिंगापुर जैसे कई देशों की चर्चा की. उनकी रैंकिंग और उनमें होने वाले खर्चों के बारे में भी बताया। उन्होंने उन दस्तावेजों की भी चर्चा की जो विदेशों में पढ़ाई के लिए आवश्यक होते हैं। टोफेल, जीआरई, पीटीई, जीमैट जैसे कई अंग्रेजी योग्यता प्रदायी आवश्यक

परीक्षाओं के बारे में भी बताया। नेशनल ओवरसीज स्कालरशिप के साथ-साथ उन्होंने मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्ति, उनकी विधि, पाठ्यक्रम, उनकी राशि, दस्तावेज, अन्य प्रक्रियाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी. डॉ. मालवी ने अन्य छात्रवृत्ति जैसे फुल ब्राइट, फेलोशिप, जे एन टाटा फेलोशिप, अगाथा हैरिसन स्कालरशिप, डाड, ग्रिफिथ आदि छात्रवृत्तियों के बारे में चर्चा करते हुए वहां पढ़ाई के साथ-साथ काम करने के अवसरों और तरीकों के बारे में भी बताया।

कार्यशाला में सामाजिक समरसता गतिविधि के मार्गदर्शक सुनील जी ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया। उन्होंने कहा किभारत के युवा आगे आयें। सामजिक समरसता भारत की पहचान है। भारत के युवा विकसित भारत के निर्माण में योगदान करें। ज्ञान अर्जन और ज्ञान का उपयोग राष्ट्र हित में करें इसी से प्रगट भारत का निर्माण होगा।

'विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थी नई तकनीक, ज्ञान और कौशल सीखें'

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर: डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में सामजिक समरसता गतिविधि श्रृंखला के अंतर्गत मंगलवार को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में अनुसूचित जाति कल्याण विभाग की योजना के तहत अजा वर्ग के छात्र, छात्राओं को विदेश में उच्च शिक्षा अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता प्रदान, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना एवं अन्य छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी दी गई।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विदेश जाना हर भारतीय का सपना होता है। विश्वविद्यालय के छात्रों की यही भावना होती है। भारत से बाहर पढ़ने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। विदेश जाने का यह आशय नहीं है कि हम पढ़कर वहीं बस जाएं या वहां की नागरिकता लेकर वहीं कार्य करें। विदेशों से पढ़ने का मेरा आशय यह है कि विद्यार्थी दुनिया के अलग-अलग देशों से नयी तकनीक, ज्ञान और कौशल सीखें और भारत आकर देश की सेवा करें। विकसित भारत

सागर। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों का स्वागत किया गया। ● नवदुनिया

की दिशा में यह उनका महत्त्वपूर्ण योगदान होगा।

मुख्य वक्ता माधव इंस्टिट्यूट आफ़ टेक्नोलाजी एंड साइंस ग्वालियर के डा. चंद्र शेखर मालवी ने टाप दस देशों की चर्चा करते हुए हर तरह की पढाई उपलब्ध कराने वाले देशों की चर्चा की जिनमें भारत के विद्यार्थी पढ़ने के लिए जा सकते हैं। उन्होंने यूके, अमेरिका, फ्रांस, चीन, नार्वे, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, सिंगापुर जैसे कई देशों की चर्चा की। उनकी रैंकिंग और उनमें होने वाले खर्चों के बारे में भी बताया। उन्होंने उन दस्तावेजों की भी चर्चा की जो विदेशों में पढ़ाई के लिए आवश्यक होते हैं। डा. मालवी ने अन्य छात्रवृत्ति जैसे फुल ब्राइट, फेलोशिप, जेएन टाटा फेलोशिप, अगाथा हैरिसन स्कालरशिप, डाड, ग्रिफिथ आदि छात्रवृत्तियों के बारे में चर्चा करते हुए वहां पढ़ाई के साथ-साथ काम करने के अवसरों और तरीकों के बारे में भी बताया। कार्यशाला में मार्गदर्शक सुनील जी ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए उनकी शंकाओं का समाधान किया। कार्यक्रम में प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. डीके नेमा, कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन, प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. नागेश दुबे, प्रो. कालीनाथ झा, डा. वेंकटमुनि रेड्डी उपस्थित थे।

विदेश में उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति पर कार्यशाला का आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में सामाजिक समरसता गतिविधि श्रृंखला के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य अनुसूचित जाति एससी वर्ग के छात्र-छात्राओं को विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी देना था। यह आयोजन मप्र शासन के अनुसूचित जाति कल्याण विभाग की योजनाओं के अंतर्गत किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुये कहा विदेश जाकर पढ़ना हर भारतीय विद्यार्थी का सपना होता है, लेकिन इसका उद्देश्य केवल विदेश में बसना नहीं होना चाहिये। विद्यार्थियों को वहां की नई तकनीक, ज्ञान और कौशल सीखकर भारत लौटना चाहिये और देश की सेवा में योगदान देना चाहिये। यही एक विकसित भारत की दिशा में उनका महत्त्वपूर्ण कदम होगा। उन्होंने डॉ. हरीसिंह गौर, महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अंबेडकर का उदाहरण देते हुये बताया कि ये सभी विदेश से पढ़कर लौटे और आजीवन देश की सेवा की। कुलपति ने यह भी बताया

कि विवि में शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण की दिशा में निरंतर प्रयास हो रहे हैं और 125 से अधिक अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक कोलैबोरेशन हो चुके हैं। कार्यशाला के मुख्य वक्ता माधव इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, ग्वालियर के डॉ. चंद्रशेखर मालवी ने विदेश में पढ़ाई की चाह रखने वाले विद्यार्थियों की सामान्य शंकाओं जैसे उपयुक्त देश, विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम, आवश्यक दस्तावेज, परीक्षायें ; आदि और खर्चों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने अमेरिक, यूके, फ्रांस, चीन, नार्वे, जर्मनी, सिंगापुर आदि देशों की चर्चा करते हुये वहां की रैंकिंग और छात्रवृत्तियों के बारे में भी बताया। उन्होंने नेशनल ओवरसीज स्कॉलरशिप, मप्र शासन की छात्रवृत्ति योजना, फुलब्राइट, जेएन टाटा फेलोशिप, अगाथा हैरिसन स्कॉलरशिप, ग्रिफिथ जैसी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय छात्रवृत्तियों की जानकारी साझा की और विदेश में पढ़ाई के साथ.साथ काम करने के अवसरों पर भी प्रकाश डाला। सामाजिक समरसता गतिविधि के मार्गदर्शक सुनील ने छात्रों को प्रेरित करते हुये कहा भारत के युवा आगे आयें, ज्ञान अर्जित करें और उसका उपयोग राष्ट्र निर्माण में करें। यही सामाजिक समरसता और विकसित भारत का आधार बनेगा। कार्यक्रम में स्वागत भाषण फैकल्टी अफेयर्स के निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने दिया। कार्यशाला का परिचय एवं उद्देश्य छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. डीके नेमा ने प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. शालिनी द्वारा किया गया तथा आभार प्रदर्शन प्रो. रत्नेश दास ने किया। इस अवसर पर कुलानुशासक प्रो. चंदा बेन, प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. नागेश दुबे, प्रो. कालीनाथ झा, डॉ. वेंकटमुनि रेड्डी सहित कई विभागाध्यक्ष भी उपस्थित रहे।

विद्यार्थी विकसित भारत के निर्माण में योगदान दें : कुलपति

जागरण, सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सभागार में सामजिक समरसता गतिविधि श्रृंखला के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में अनुसूचित जाति कल्याण विभाग मध्य प्रदेश शासन की योजना के तहत अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र छात्राओं को विदेश में उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता प्रदान राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना एवं अन्य छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी दी गई।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विदेश जाना हर भारतीय का सपना होता है। विश्वविद्यालय के छात्रों की यही भावना होती है। इसी भावना को ध्यान में रखकर इस कार्यशाला को आयोजित किया गया है। भारत से बाहर पढ़ने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। विदेश जाने का यह आशय नहीं है कि हम पढ़कर वहीं बस जाएँ या वहां की नागरिकता लेकर वहीं कार्य करें। विदेशों से पढ़ने का मेरा आशय यह है कि विद्यार्थी दुनिया के अलग.अलग देशों से नयी तकनीक ज्ञान और कौशल सीखें और भारत आकर देश की सेवा करें। विकसित भारत की दिशा में यह उनका महत्त्वपूर्ण योगदान होगा। देश सेवा सर्वोपरि है। विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ। गौर गांधी डा. अम्बेडकर भी विदेश पढ़ने गये लेकिन उन्होंने वहां से ज्ञान प्राप्त कर भारत वापस आकर देश की आजीवन सेवा की। विश्वविद्यालय में विदेशी विद्यार्थियों के प्रवेश का भी रास्ता खुल रहा है। विश्वविद्यालय के शिक्षकों के 125 से अधिक कोलैबोरेशन हैं। कुल मिलाकर शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण की दिशा में भारत आगे बढ़ रहा है। हमारा विश्वविद्यालय भी उसी दिशा में कार्य कर रहा है। शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण हो लेकिन भारत के छात्र विदेशों से पढ़कर भारत की सेवा करें यही मेरी कामना है। मुख्य वक्ता माधव इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एन्ड साइंस ग्वालियर के डा. चंद्र शेखर मालवी ने अपने वक्तव्य की शुरुआत उन प्रश्नों से की जो विदेश पढ़ने जाने को इच्छुक एक सामन्य विद्यार्थी के मस्तिष्क में आते हैं। जैसे कौन से देश जाएँ किस विदेशी विश्वविद्यालय में पढ़े पाठ्यक्रम कौन सा चुनें कौन सी छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करें क्या क्या दस्तावेज और प्रक्रियाएं हैं इत्यादि। उन्होंने उन दस्तावेजों की भी चर्चा की जो विदेशों में पढ़ाई के लिए आवश्यक होते हैं। टोफेल जीआरई पीटीई जीमैट जैसे कई अंग्रेजी योग्यता प्रदायी आवश्यक परीक्षाओं के बारे में भी बताया। नेशनल ओवरसीज स्कालरशिप के साथ-साथ उन्होंने मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली छात्रवृत्ति उनकी विधि पाठ्यक्रम उनकी राशि दस्तावेज अन्य प्रक्रियाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डॉ मालवी ने अन्य छात्रवृत्ति जैसे फुल ब्राईटए फेलोशिप जे एन टाटा फेलोशिप अगाथा हैरिसन स्कालरशिप डाड ग्रिफ्थि आदि छात्रवृत्तियों के बारे में चर्चा करते हुए वहां पढ़ाई के साथ.साथ काम करने के अवसरों और तरीकों के बारे में भी बताया।

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Email- mediaofficer@dhsgsu.edu.in Website- www.dhsgsu.edu.in